5

अपना सब कुछ

(मत्ती 13:44-46)

हम में से अधिकतर लोग, जो प्रचारक हैं, किसी छोटी सी बात को लेकर उस पर लम्बा सा उपदेश देने की क्षमता रखते हैं। इसके बिल्कुल विपरीत यीशु महान सच्चाइयों का निचोड़ निकाल कर उसे संक्षिप्त यानी सामर्थी कथन में कह सकता था।

इस पाठ में, हम यीशु के दो अति संक्षिप्त किन्तु सामर्थ से परिपूर्ण कथनों अर्थात दो दृष्टांतों का अध्ययन करेंगे, जो केवल तीन आयतों में पाए जाते हैं।

> स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे धन के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पाया और छिपा दिया, और मारे आनन्द के जाकर अपना सब कुछ बेच दिया और उस खेत को खरीद लिया।
>
> फिर स्वर्ग का राज्य एक व्यापारी के समान है, जो अच्छे मोतियों की खोज में था। जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला तो उसने जाकर अपना सब कुछ बेच डाला और उसे खरीद लिया (मत्ती 13:44-46)।

राज्य का मूल्य

छिपे हुए धन का दृष्टांत

मत्ती 13:44 का आरम्भ इन शब्दों से होता है, "स्वर्ग का राज्य उस धन के समान है, जो खेत में छिपा हुआ था।" खेत में धन छिपाने की बात हमें कुछ अजीब लग सकती है, पर यीशु के सुनने वालों ने अवश्य सहमति में अपने सिर हिलाए होंगे। उस ज़माने में यदि कोई अपना धन या मूल्यवान वस्तु बैंक में रखता,[1] तो जब वह अपनी चीज़ें लेने जाता तो उसे वहां से मिलती या न मिलतीं। इसलिए अधिकतर लोग अपनी मूल्यवान वस्तुएं ज़मीन में गाड़ दिया करते थे (जैसे मत्ती 25:18 में एक तोड़े वाले दास ने किया था)।[2]

ज़मीन में धन छिपाने का एक और भी कारण था। इस क्षेत्र में किसी भी समय अचानक हमला होने का डर रहता था। पलिश्तीन देश मिस्र और मैसोपोटामिया के बीच में बसा हुआ था। प्राचीन काल में हमलावर सेनाएं उधर से गुज़रती रहती थीं। संसार भर में पलिश्तीन से अधिक कहीं भी लड़ाई नहीं हुई होगी। बहुत से धनवान लोग हमले की तैयारी अपनी सम्पत्ति को तीन भागों में बांट कर किया करते थे। एक तिहाई भाग वे व्यापार में लगाते थे। एक तिहाई भाग का इस्तेमाल गहने और ऐसी महत्वपूर्ण चीज़ों में खर्च कर देते थे, जिन्हें हमले के समय अपने साथ आसानी से कहीं भी ले जाया जा सके। बचा हुआ तीसरा भाग वे ज़मीन में दबा देते थे। लड़ाई के बाद वापस आने पर यही धन उनके कारोबार में काम आता था। कई बार वे वापस नहीं भी आते

थे। इस प्रकार पूरे पलिश्तीन में हर जगह धन छिपा हुआ था।

यीशु का दृष्टांत दबे हुए धन के विषय में है। दबे हुए भण्डार की बात हमारा ध्यान खींचती है। संसार के हर भाग में इस तरह के छिपे भण्डार के किस्से पाए जाते हैं-समुद्री डाकुओं का ख़ज़ाना, डूबे हुए जहाज़ का ख़ज़ाना या फिर दुर्लभ सोने की खानें। कुछ समय पहले ही टैक्सस के *वाको* नामक शहर के दो आदमियों को विश्वास था कि जैसी जेम्स[3] ने धन व अन्य कीमती वस्तुओं से भरी एक तिज़ोरी उस इलाके में दबा रखी है। एक टीवी रिपोर्ट में उन्हें बुल्डोजर चलाने वाले को समझाते हुए दिखाया गया कि कहां खुदाई करनी है! अन्त में बताया गया कि उन्होंने खुदाई के इस काम में 1,40,000 डॉलर खर्च कर दिए थे, परन्तु इससे वे केवल एक बड़ा गड्ढा ही खुदवा पाए थे।[4]

पर यीशु के दृष्टांत दबाए हुए ऐसे ख़ज़ाने के बारे में नहीं हैं; यह तो उस दबे हुए ख़ज़ाने के बारे में हैं, जो मिल गया था: ''... जिसे किसी मनुष्य ने पाया और फिर छिपा दिया और मारे आनन्द के जाकर अपना सब कुछ बेच दिया और उस खेत को खरीद लिया'' (आयत 44)।

हम यह मान सकते हैं कि यह व्यक्ति निर्धन था। वह खेत, जिसमें वह काम करता था, उसका अपना नहीं था। वह एक साधारण मज़दूर था, शायद खेत के मालिक का नौकर। इस दृश्य को समझने के लिए कल्पना करते हैं कि वह आदमी धीरे-धीरे उस खेत में हल चला रहा था। उसके चेहरे पर उम्मीद की कोई झलक नहीं थी। आज का दिन बीते कल की तरह ही होना था। उसका जीवन कठिन परिश्रम, सो जाना, फिर काम पर जाना, और आ कर सो जाने के अलावा और कुछ नहीं था।

पर आज उसका हल ज़मीन में धंसते ही खेत में उसे ''छन'' की आवाज़ आई। उसे लगा कि ''कोई पत्थर होगा।'' मालिक की आज्ञा थी कि खेत में कोई पत्थर या कंकर नहीं रहना चाहिए; इसलिए थोड़ा सा बुड़बुड़ाते हुए वह घुटनों के बल बैठ गया और दोनों हाथों से मिट्टी कुरेदने लगा। ज़मीन में दबी वह चीज़ पत्थर नहीं लग रही थी। वह किसी संदूक की तरह चौड़ी थी। ढक्कन से मिट्टी हटाते ही उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। संदूक खोला तो देखा कि वह सोने के सिक्कों और हीरे-जवाहरात से भरा हुआ था, इतना बड़ा ख़ज़ाना, जिसके बारे में वह सपने में भी नहीं सोच सकता था!

उसने इधर उधर देखा। कोई नहीं था। उस संदूक को बन्द करके गड्ढे में मिट्टी डालकर फुर्ती से भरते हुए वह सोच रहा था: ''अब क्या करूं?'' फिर ज़ोर से उसके मुंह से निकला, ''मुझे मालूम है, क्या करना है!''

अपने औज़ार खेत में ही फैंक कर वह जल्दी से घर गया और बेचने योग्य हर चीज इकट्ठा करने लगा। उसकी पत्नी उसके कमरे में आई, जो अपनी मां का दिया हुआ सोने का हार पहने हुई थी। उसने अपनी पत्नी के गले से वह हार खींच लिया। उसकी पत्नी घबरा गई और चिल्लाने लगी, ''आप यह क्या कर रहे हैं? पागल तो नहीं हो गए?''

उसने दांत खिसियाते हुए कहा, ''मैं इसे बेचने जा रहा हूं!''

''इसे बेच दोगे? पर मेरे पास तो केवल यही गहना बचा है!''

दरवाज़े की ओर बाहर जाते हुए उसने सिर घुमा कर यही कहा, ''भाग्यवान, बहुत जल्द मैं तुझे गहनों से लाद दूंगा!''

''सच,'' पत्नी ने अपने फटे-पुराने कपड़ों की ओर देखते हुए कहा। ''अच्छा, मेरे इन कपड़ों के साथ बहुत जचेंगे!''

उसे उसके व्यंग्य भरे शब्द सुनाई नहीं दिए। हाथ में गहने लिए, अपनी बकरी और गधे पर सामान लादे, उन्हें हांकते हुए वह गुनगुनाता हुआ जा रहा था। जल्द ही उसने अपना सब कुछ बेच दिया। अंत में जब उसने वह खेत मोल ले लिया तो उसकी खुशी का कोई ठिकाना न था। ''अब यह मेरा है; सचमुच मेरा है!''

कृपया इस कहानी की शिक्षा के चक्कर में न पड़ें कि वह नैतिक, कानूनी और उचित थी या नहीं। हमें नहीं मालूम कि जो इस आदमी ने किया वह गलत था या सही। कुछ लोगों का विचार है कि रब्बियों की व्यवस्था के अनुसार वह मिले हुए ख़ज़ाने पर दावा करने का अधिकारी था और उसने वह खेत केवल अपने दावे को पक्का करने के लिए खरीदा था। ऐसा था या नहीं, इससे इस दृष्टांत के संदेश को कोई फर्क नहीं पड़ता। आमतौर पर यीशु के हर दृष्टांत में कोई विशेष सच्चाई सिखाई जाती है।[5] आवश्यक नहीं है कि उसकी हर बात को हम लागू करें,[6] पर हमारे लिए उन विशेष बातों का ध्यान रखना आवश्यक है, जिन्हें यीशु हमारे मन में बिठाना चाहता था।

फिर से इस एक आयत वाले दृष्टांत को देखें और आप पाएंगे कि इस में ज़ोर उस आदमी पर नहीं, बल्कि धन पर है। ''स्वर्ग का राज्य ... धन के समान है।'' यीशु इस बात पर ज़ोर देना चाहता था कि स्वर्ग का राज्य एक *ख़ज़ाना* है यानी यह बहुत ही अद्‌भुत, बहुत ही कीमती और बहुत ही मूल्यवान ख़ज़ाना है, जो हमारी कल्पना से भी परे है!

बहुमूल्य मोती का दृष्टांत

आयत 45 ''फिर'' शब्द के साथ आरम्भ होती है। राज्य की धारणा इतनी बड़ी है कि इसे किसी एक दृष्टांत के साथ प्रस्तुत करना बड़ा कठिन है, इसलिए यीशु ने एक और दृष्टांत दिया। ''स्वर्ग का राज्य एक व्यापारी के समान है'' (आयत 45)। पिछले दृष्टांत में ज़ोर ख़ज़ाने पर दिया गया था। इस दृष्टांत में ज़ोर आदमी पर दिया गया है।

वह आदमी ''अच्छे मोतियों की खोज में था'' (आयत 45)। पिछले दृष्टांत वाले आदमी को अचानक धन मिल गया था। वह उसकी खोज में नहीं था। वह तो अपना काम कर रहा था और उसे यह अचानक मिल गया था। इस दृष्टांत वाला आदमी *खोज में* था। इसी प्रकार कुछ लोगों को सच्चाई अचानक मिल जाती है और वे उसे पहचान लेते हैं और आनन्द से उसे ग्रहण करते हैं जबकि ऐसे भी हैं, जो उसकी खोज में हैं।

यूहन्ना 3 और 4 से इस अन्तर का पता चलता है। अध्याय 3 में नीकुदेमुस प्रश्नों के उत्तर ढूंढ़ने के लिए यीशु के पास आया और उसे मसीह मिल गया। अध्याय 4 में सामरी स्त्री पानी लेने कुएं पर आई थी और उसे मसीह के बारे में सच्चाई का पता चल गया। प्रेरितों 8 और 9 अध्याय में एक और उदाहरण है। प्रेरितों 8 में, हब्शी खोजा मार्ग में जाते-जाते अपनी बाइबल पढ़ते हुए[7] उत्तर ढूंढ़ रहा था। प्रेरितों 9 में शाऊल पृथ्वी से मसीही लोगों का नाम-ओ-निशान मिटाने की धुन में जा रहा था। अपनी यात्राओं के अन्त में, दोनों को ही यीशु की सच्चाई का पता चल गया।

आप आराधना में क्यों जाते हैं? क्या आप सच्चाई के खोजी हैं? आप जीवन का उद्देश्य जानना चाहते हैं? आप उस खोज में हैं, जिससे आपके जीवन का महत्व बढ़ जाए? आप

आराधना में अपने परमेश्वर के साथ सदा तक रहने की इच्छा से जाते हैं? या आप किसी और कारण से जाते हैं या बिना कारण ही जाते हैं? आपका उद्देश्य महत्वपूर्ण नहीं है, महत्वपूर्ण तो यह है कि वह भण्डार मिल जाने के बाद आप में उस भण्डार को पहचानने की समझ है कि या नहीं। अत: उसे पहचान लेने के बाद उसे हर हाल में पा लेने की इच्छा है या नहीं।

आइए कहानी में आगे बढ़ते हैं। वह आदमी ''बहुमूल्य मोतियों'' की तलाश में था। मोतियों को आज कीमती गहना माना जाता है पर बाइबल के समय में उन्हें इससे भी बढ़कर मूल्यवान माना जाता था। लोगों को उन्हें खरीदना और देखना ही नहीं, उन्हें हाथ में पकड़कर सहलाना भी अच्छा लगता है। कइयों को मोतियों से एक अजीब सा लगाव होता था। अच्छे मोतियों के व्यापारी को धनवान व्यक्ति माना जाता था।

जवाहरात में मोतियों को एक विशेष दर्जा प्राप्त है। ज़मीन में अधिकतर मोती हज़ारों सालों की गरमी और दबाव से बने हैं, लेकिन आप जब इन पंक्तियों को पढ़ रहे हैं तब भी मोती तैयार हो रहे हैं। रेत का एक कण शंख के कवच में चला जाता है। इस कण के साथ शंख को कष्ट होता है, जिस कारण वह इस कण को एक पतले से दूधिया घोल से ढांपने लगता है। वह कण पूरी तरह उस घोल से चिपक जाता है और शंख को कुछ राहत मिलती है। यह फिर दोबारा उस तंग करने वाली चीज़ को उस तरल पदार्थ से ढक देता है। इस प्रकार यह प्रक्रिया तब तक चलती है, जब तक वह कण मोती नहीं बन जाता। कहते हैं कि मोती ही एक ऐसा नग है जो बहुत कष्ट के साथ बनता है। उस ज़माने में ज़मीन पर मोती कहीं-कहीं जैसे, भूमध्य सागर के कुछ खास इलाकों, लाल समुद्र, फारस की खाड़ी तथा ब्रितानिया में ही पाए जाते थे।

यह आदमी मोतियों की खोज में था, पर मामूली मोतियों की खोज में नहीं। वह तो ''बहुमूल्य मोतियों'' की खोज में था। वह तो उत्तम वस्तु की खोज में था। जिस उलटे-सीधे तरीके से ये मोती बनते हैं, उन कारणों से इनमें कई अन्तर आ जाते हैं। कई बार मोती पूरी तरह गोल नहीं बनता। कई बार बहुत छोटा रह जाता है। कई बार रंग मेल नहीं खाता। पर उस व्यापारी के मन में किसी एक मोती का ऐसा रूप था, जिसके मिलने की उसे कभी उम्मीद नहीं थी, पर उसके साथ उसने सारे मोतियों की तुलना इसी उम्मीद से की कि यह खरे मोती का एक रूप हो। हज़ारों मोती हाथ से निकलने के कारण उसकी आंखें तथा हाथ कीमती मोती को परखने में निपुण हो गए थे।

एक दिन एक अजीब घटना घटी, ऐसी जो हज़ारों में से किसी एक के जीवन में ही घटती है; उसे अपना लक्ष्य, खरा मोती मिल गया! वह मोती पाकर उसने कीमत या मोल-भाव करने में समय नहीं गंवाया। ''जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला, तो उसने जाकर अपना सब कुछ बेच डाला[8] और उसे खरीद लिया'' (आयत 46)।

इस सिद्धांत को पिछले दृष्टांत की तरह विस्तार से समझाने की आवश्यकता नहीं। उस दृष्टांत में एक आदमी थोड़ा-सा मूल्य भर कर बहुत कुछ पा लेता है। इस दृष्टांत में आदमी पूरा मूल्य चुकाता है। पर दोनों दृष्टांतों में पैसे कम या अधिक देने को प्राथमिकता नहीं है। मनुष्य उद्धार या मुक्ति को खरीद नहीं सकता, क्योंकि यह तो यीशु के लहू से खरीदी जा चुकी है। आप या मैं आत्मिक आशिषों को न खरीद सकते हैं, न कमा सकते हैं और न इसके अधिकारी हैं। फिर बहुमूल्य मोती के दृष्टांत में यीशु हमें क्या सिखाना चाहता है। इस आदमी को इतना बड़ा ख़ज़ाना

मिला कि वह इसे पाने के लिए अपना सब कुछ बेचने को तैयार हो गया था।

यदि हमें इन दोनों दृष्टांतों का निष्कर्ष निकालने की कोशिश करनी हो तो हम इस तरह निकाल सकते हैं: स्वर्ग का राज्य सब से बहुमल्य, सबसे महंगा और संसार में सबसे अधिक पसंद किया जाने वाला है!

राज्य की पहचान

यह ''स्वर्ग का राज्य'' है, क्या, जो इतना कीमती है?

हमारे मन में सबसे पहले यही प्रश्न उठ सकता है कि स्वर्ग की बात है इस कारण ''स्वर्ग *का राज्य*'' वाक्यांश इस्तेमाल किया गया है। कई बार ''राज्य'' शब्द का इस्तेमाल स्वर्ग के लिए किया जाता है, पर इस विशेष आयत में यह बात नहीं है। मरकुस और लूका ने एक ही मूल समूह को लिखते हुए ''*परमेश्वर* का राज्य'' वाक्य का इस्तेमाल किया (मरकुस 4:11, 26, 30; लूका 8:10)। मैं इस प्रश्न को अपने शब्दों में कहता हूं: ''परमेश्वर का राज्य'' है , क्या चीज़, जो इतनी महंगी है?

''परमेश्वर का राज्य'' वाक्यांश पूरी बाइबल में मूल रूप में मिलता है। ये शब्द अपने राज्य में परमेश्वर के शासन का संदेश देते हैं। परमेश्वर का अधिकार हर चीज़ पर होने के कारण बाइबल में कहीं-कहीं इसे पूरे संसार या पूरी सृष्टि के लिए इस्तेमाल किया गया है। पर आमतौर पर इस वाक्यांश का इस्तेमाल परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के मनों तथा जीवनों पर विशेष शासन के रूप में किया जाता है, जिन्होंने अपने आप को उसके अधिकार के सामने सौंप दिया है। पुराने नियम में इसे इस्राएल का राज्य कहा जाता था, क्योंकि सीनै पहाड़ पर इस्राएलियों ने परमेश्वर के साथ एक वाचा बान्धी थी।

पर पुराने नियम का अध्ययन करते हुए पता चलता है कि इस्राएली एक विशेष राज्य के स्थापित होने की बाट जोह रहे थे (तुलना करें दानिय्येल 2:44), जिसका शासन उस राजा के द्वारा होना था, जिसे ''मसीहा'' कहा जाता है (तुलना दानिय्येल 9:25, 26)। ''मसीहा'' शब्द का अर्थ है ''अभिषिक्त'' या ''चुना हुआ।'' इस्राएल के राजाओं को ''यहोवा के अभिषिक्त'' माना जाता था (तुलना 1 शमूएल 24:10; 26:9)। पूरे पुराने नियम में एक ही विषय मिलता है कि मसीह अपना राज्य स्थापित करने आ रहा था।

यीशु ही वह मसीहा था, जिसका वे इंतजार कर रहे थे। ''मसीहा'' शब्द का यूनानी रूप ''ख्रिस्तुस'' है। यीशु अर्थात ख्रिस्तुस या मसीह ने आकर संदेश दिया, ''मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है'' (मत्ती 4:17)। या यूं कहें कि ''पुराने नियम में की गई सब प्रतिज्ञाओं और राज्य की भविष्यवाणियों के पूरा होने का समय आ गया है।'' राज्य के विषय में बोलते हुए यीशु ने ज़ोर देकर कहा कि ''मेरा राज्य इस संसार का नहीं'' (यूहन्ना 18:36)। उसका शासन आत्मिक होना था।

यीशु ने अपनी मृत्यु से पहले चेलों को कहा था कि वे ''परमेश्वर के राज्य को *सामर्थ सहित* आया हुआ'' देखेंगे (मरकुस 9:1)। मारे जाने, दफ़नाए जाने और जी उठने के बाद उसने चेलों से कहा, ''जब तक स्वर्ग से सामर्थ नहीं'' मिलती तब तक वे यरूशलेम में ही ठहरे रहें (लूका 24:49)। अपने ऊपर उठाए जाने के थोड़ी देर पहले उसने उनसे कहा, ''जब *पवित्र आत्मा* तुम

पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे'' (प्रेरितों 1:8)। कुछ दिन बाद यहूदियों के पिन्तेकुस्त वाले दिन पवित्र आत्मा उन पर उतरा (प्रेरितों 2:1-4)। पवित्र आत्मा के उतरने पर उन्हें सामर्थ मिली। सामर्थ मिलने पर राज्य आया। वही राज्य, जिसकी प्रतीक्षा युगों से थी। अन्ततः मसीह की मृत्यु, दफ़नाए जाने और जी उठने के बाद आने वाले पहले पिन्तेकुस्त के दिन राज्य स्थापित हो गया। तभी से राज्य के अस्तित्व में होने की बात की जाती है (कुलुस्सियों 1:13)।

प्रेरितों 2 अध्याय के बाद इस संस्था के लिए एक और शब्द ''कलीसिया'' अधिक प्रचलित हो गया। हम अक्सर गाते हैं, ''राज तुम्हें देने के लिए यीशु बुलाता है।'' अग्रंजी गीत की पहली आयत ऐसे है:

हे प्रभु, मुझे तेरा राज्य प्रिय है,
तेरे घर का निवास;
कलीसिया जिसे हमारे छुड़ाने वाले ने
अपने ही बहुमुल्य लहू से छुड़ाया है,
हे परमेश्वर, मुझे *तेरी कलीसिया* प्रिय है![9]

पूरे नये नियम में कलीसिया को परमेश्वर का वर्तमान विशेष राज्य कहा गया है। कलीसिया वह विशेष राज्य है, जिस पर आज परमेश्वर शासन कर रहा है, यानी ये वे लोग हैं, जिन्होंने उसके अधिकार को मान लिया है।

नये नियम में ''कलीसिया'' तथा ''राज्य'' शब्दों का एक-दूसरे की जगह इस्तेमाल किया जाता है। उदाहरण के लिए यूहन्ना 3:3, 5 में यीशु ने कहा कि *राज्य में* जल तथा आत्मा से जन्म लेकर प्रवेश किया जा सकता है। पर प्रेरितों की पुस्तक तथा पत्रियों में हम देखते हैं कि परमेश्वर की प्रेरणा पाए लोगों की आज्ञा से लोगों को पानी में बपतिस्मा दिए जाने पर उन्हें *कलीसिया* में मिला लिया गया था (प्रेरितों 2:38, 41, 47; 1 कुरिन्थियों 12:13)। मत्ती 16 में यीशु ने फिर अपनी ''कलीसिया'' (आयत 18) बनाने की बात की, परन्तु तब उसने उसे ''राज्य'' कहा (आयत 19)। इसके अलावा प्रभु-भोज आरम्भ करते समय यीशु ने कहा था कि इसको दोबारा तब तक नहीं खाया जाएगा, जब तक ''परमेश्वर के *राज्य*'' में नहीं लिया जाता (लूका 22:16, 18)। पर प्रेरितों की पुस्तक तथा पत्रियों से पता चलता है कि *कलीसिया* प्रभु भोज लेती थी (प्रेरितों 20:7; 1 कुरिन्थियों 11:17-34)।

इसलिए हम मत्ती 13 के दो दृष्टांतों का निष्कर्ष यह निकाल सकते हैं कि '' *कलीसिया* संसार की सबसे कीमती, सबसे महंगी तथा सबसे अधिक चाही जाने वाली चीज़ है!''

एकदम मुझे एक विरोध भरी आवाज़ सुनाई देती है: ''ज़रा रुकना! मैंने उन लोगों की आराधना देखी है, जहां आप प्रचार करते हैं, पर मुझे उनमें कोई कीमती चीज़ नहीं मिली।'' आपको मिले या न मिले, पर वह कीमती है। यह मेरा नहीं, बल्कि परमेश्वर का मूल्यांकन है। उनको खरीदने के लिए मसीह का लहू देना पड़ा था (प्रेरितों 20:28)।

यदि मैं अपनी बात कुछ विस्तार से बताऊं तो शायद आपको समझ आ जाए। जब मैं ''कलीसिया'' शब्द का इस्तेमाल करता हूं, तो मैं मनुष्यों द्वारा बनाई किसी संस्था की बात नहीं कर रहा होता बल्कि उस कलीसिया की बात कर रहा होता हूं, जिसके बारे में हम नये नियम में

पढ़ते हैं।

उदाहरण के लिए, *कलीसिया को यीशु मसीह से अलग नहीं किया जा सकता।* यीशु कलीसिया का सिर है; कलीसिया उसकी देह है (इफिसियों 1:22, 23)। कलीसिया मसीह की परिपूर्णता है (इफिसियों 1:23)। यीशु अपनी कलीसिया के इतना पास है कि जब सौलुस *कलीसिया* को सता रहा था (प्रेरितों 8:3) तो यीशु ने उससे पूछा था, ''तू मुझे क्यों सताता है ?'' (प्रेरितों 9:4)। इस प्रकार जब हम कलीसिया की बात करते हैं तो उसमें यीशु को भी शामिल करते हैं और हमें यह मानना ही पड़ेगा कि वह संसार में सबसे कीमती, सबसे महंगा तथा सबसे अधिक चाहा जाने वाला है![10]

कलीसिया को उद्धार से अलग नहीं किया जा सकता। यीशु ने क्रूस पर ''अपने आप को कलीसिया के लिए दे दिया'' (इफिसियों 5:25)। उसने कलीसिया को ''अपने ही लहू से'' मोल ले लिया (प्रेरितों 20:28)। वह कलीसिया का ''बचाने वाला'' है (इफिसियों 1:22, 23; 5:23)। जब लोग उसकी बात को मान कर उसके अनुग्रह से उद्धार पाते हैं तो परमेश्वर उन्हें कलीसिया में मिला लेता है (प्रेरितों 2:38, 41, 47[11])। कलीसिया यीशु के लहू द्वारा उद्धार पाए हुए लोगों का समूह या मण्डली है। निश्चय ही हर कोई मानेगा कि पिछले पापों से मुक्ति तथा स्वर्ग की आशा सबसे कीमती, सबसे महंगी तथा संसार में सबसे अधिक चाही जाने वाली बात है!

इन दृष्टांतों में इस्तेमाल किए गए यीशु के शब्द ''स्वर्ग का राज्य'' और ''परमेश्वर का राज्य'' भी *कलीसिया को परमेश्वर या उसके सिंहासन से अलग नहीं कर सकता*। वास्तव में, जब हम ''छिपे ख़ज़ाने'' या ''बहुमूल्य मोती'' की बात करते हैं, तो हम आत्मिक खज़ाने अर्थात सच्चाई, यीशु, उद्धार पाने, मसीह के लहू के द्वारा उद्धार पाए लोगों की संगति (जिसे कलीसिया कहते हैं) परमेश्वर के साथ संगति, स्वर्ग की आशा की बात कर रहे होते हैं। इनमें से किसी भी बात को कलीसिया या राज्य के बारे में नये नियम की शिक्षा से अलग नहीं किया जा सकता। ये आत्मिक सच्चाइयां सबसे कीमती, सबसे महंगी तथा संसार में सबसे अधिक चाही जाने वाली है।

संसार नहीं मानता। यदि संसार के लोगों से पूछा जाए कि वे सबसे कीमती चीज़ किसे मानते हैं, तो अधिकतर लोगों का उत्तर होगा, ''प्रसिद्धि।'' ''प्रसिद्धि'' पाने पर बहुत से लोग कहते हैं, ''मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण दिन, जीवन भर की कमाई यही है!'' अन्यों का उत्तर होगा कि धन और शक्ति वास्तव में महत्वपूर्ण है।

संसार के इस चक्कर में न फंसना बड़ा कठिन है। एक बहुत बड़े कमरे की कल्पना करें। कमरे की एक दीवार में बहुत से दरवाज़े हैं,[12] जिनमें से एक दरवाज़े पर ''कीर्ति''; एक पर ''सत्ता''; एक पर ''सम्पत्ति''; और एक पर ''प्रसिद्धि'' लिखा है। इन दरवाज़ों के सामने धक्का-मुक्की करते लोगों की एक लम्बी कतार है। दरवाज़े के दूसरी ओर एक गुमनाम कोने की ओर, धुंधला सा एक छोटा लेबल लगा है, ''स्वर्ग का राज्य।'' उस दरवाज़े के बाहर गिने-चुने लोग थे।[13] यदि आप उन कुछेक लोगों में से हैं तो दूसरे दरवाज़ों पर लोगों की भीड़ को देखकर यह विचार आना कठिन नहीं है कि शायद आप किसी विशेष बात से चूक रहे हैं।

अभी पढ़े दो दृष्टातों में यीशु का दृष्टांत समझें और अच्छी तरह से जान लें कि सांसारिक सफलता के दरवाज़ों पर चाहे कितनी भी भीड़ क्यों न लगी हो, पर वास्तव में मूल्यवान केवल परमेश्वर का राज्य ही है! इन दृष्टांतों में से दोनों आदमियों को समझ आ गई थी कि सचमुच

मूल्यवान वस्तु क्या है। इसलिए इसे पाने के लिए वे हर कीमत देने को तैयार थे।

राज्य का दाम

हमें अपने आप से यह पूछने की आवश्यकता है कि "क्या मुझे इस बात का अहसास है कि स्वर्ग का राज्य कितना शानदार, कितना कीमती, कितना ज़बर्दस्त और कितना महंगा है?"

बाइबल के हमारे वचन से पता चलता है कि हम इस प्रश्न का उत्तर जान सकते हैं। मत्ती 13:44-46 में यीशु के शब्दों पर फिर ध्यान दें और कई शब्दों को अपने मन में रेखांकित कर लें:

> स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए धन के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पाकर छिपा दिया, और मारे आनन्द के जाकर <u>अपना सब कुछ</u> बेच कर उस खेत को मोल ले लिया।
> फिर स्वर्ग का राज्य एक व्यापारी के समान है, जो अच्छे मोतियों की खोज में था। जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला तो उसने जाकर <u>अपना सब कुछ</u> बेच दिया और उस मोती को खरीद लिया।

हम आत्मिक वास्तविकताओं का मूल्य उनको पाने के लिए किए जाने वाले बलिदान के हिसाब से लगाते हैं। यीशु ने कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो *अपने आप का इनकार करे* और मेरे पीछे हो ले" (मत्ती 16:24)।

कुछ परिस्थितियों में दृष्टांतों में दिए गए लोगों की तरह हमें अपने सामने ठहराए गए परमेश्वर के मार्ग पर चलने के लिए सचमुच सब-कुछ बेचने की आवश्यकता पड़ सकती है (मत्ती 19:21)।[14] पर हम में से अधिकतर लोगों के लिए, हम सबसे महत्वपूर्ण बात को प्राथमिकता देकर यह दिखाते हैं, "*पहले* तुम [परमेश्वर के] राज्य और धर्म की खोज करो" (मत्ती 6:33)। यीशु और उसकी वस्तुओं (कलीसिया सहित) की तुलना करने पर इस जीवन की बातें बेकार हो जाती हैं। जब वे आत्मिक जीवन में हस्तक्षेप करें तो उन्हें अपने जीवन से निकाल देना आवश्यक है। परमेश्वर का राज्य हमारे जीवन का मुख्य केन्द्र बनना चाहिए।

प्रश्न उठता है, "क्या परमेश्वर के राज्य को पाने के लिए मैं कोई भी बलिदान करने को तैयार हूं?"

दो आदमी थे, जो एक-दूसरे को बचपन से जानते थे। कई सालों बाद वे फिर मिले। उनमें से एक निर्धन मसीही था, जिसके पास इस संसार की विलासिता की वस्तुएं बहुत कम थीं। दूसरे के पास जीवन का हर ऐशो-आराम था।[15] मुलाकात के समय उन दोनों में एक बात की समानता थी: दोनों के बेटों की मृत्यु हो चुकी थी।

जब धनी आदमी ने अपने बेटे की मौत के बारे में बताया, तो यह स्पष्ट हो गया कि उसका जीवन और उसके सपने अपने बेटे के साथ ही जुड़े हुए थे। यह कहते हुए कि "बड़ी उम्मीद थी कि मेरा बेटा मेरा कारोबार संभालेगा। अब समझ में नहीं आता कि क्या करूं? जीवन बीच मझदार में ही थम सा गया है" उसकी आंखों से आसूं बहने लगे!

अपने बेटे की मृत्यु के बारे में बताते हुए मसीही व्यक्ति ने कहा, "मेरा मन दु:खी है, मुझे उसकी याद तो बहुत आती है, पर मुझे पता है इस समय वह अच्छी जगह है। अब मैं इस आशा में जी रहा हूं कि एक दिन जाकर उससे मिलूंगा।"

धनी व्यक्ति ने मसीही व्यक्ति से कहा, ''ऐसा विश्वास पाने के लिए मैं अपना सब कुछ दे सकता हूं।''

मसीही व्यक्ति ने सहजता से उत्तर दिया, ''इसकी कीमत इतनी तो है ही।'' क्या हम इस खज़ाने को पाने के लिए ''अपना सब-कुछ बेचने'' के लिए तैयार हैं ?

बहुत से लोगों को यह बात अच्छी नहीं लगेगी, पर वास्तव में इससे अच्छी और कोई बात हो ही नहीं सकती। संसार भर की मूल्यवान वस्तुओं से भरे एक शोरूम की कल्पना करें। उस शोरूम में चार जन प्रवेश करते हैं। उनमें से एक बहुत धनवान है, एक कंगाल है, जबकि अन्य दो न अधिक अमीर हैं और न ही गरीब। इनमें से एक आपके जैसा है और एक मेरे जैसा। कहानी को थोड़ा आसान करने के लिए मैं केवल इतना कहता हूं कि वह मुझे ही दर्शाता है।

शोरूम में जाकर हमारी आंखें वहां रखे सामान की चमक से चुंधिया जाती हैं। हम बार-बार यह देखने के लिए कि हम कौन-सी चीज़ खरीद सकते हैं और कौन सी नहीं, उन चीज़ों पर लिखा मूल्य पढ़ते हैं। अमीर आदमी जो चाहे खरीद सकता है; गरीब आदमी को खरीदने के लिए कुछ नहीं मिलता; तीसरा आदमी और मैं कुछ चीज़ें खरीद सकते हैं पर अधिकतर चीजें खरीदने के लिए हमारी जेब हमें इज़ाजत नहीं देती।

हम शोरूम के बिल्कुल बीच वाले भाग में आते हैं-और वहां हमारे सामने खज़ाना पड़ा है; हमारी धड़कन तेज़ हो जाती है; हम अपनी आंखें उस पर से हटा नहीं सकते। जितना अधिक हम उसकी ओर देखते हैं उतना ही उस शोरूम में पड़ी दूसरी चीज़ें हमें कबाड़ लगने लगती हैं। खज़ाना देखकर हममें से हर एक को पता है कि उसे पाए बिना हमें चैन नहीं मिल सकता। उसके ऊपर कीमत वाली पर्ची नहीं मिलती, और हम एक-दूसरे से पूछते हैं, ''यह कितना महंगा हो सकता है ?''

गरीब आदमी अपनी जेब टटोलता है। उसके हाथ में पांच रुपए हैं। टूटे हुए मन से वह कहता है, ''मेरे पास तो यही है।'' अगला आदमी अपना बटुआ देखता है। वह कहता है, ''मेरे पास पचास रुपए हैं।'' कुछ देर सोचने के बाद मैं कहता हूं, ''अपना सब कुछ बेचने के बाद मेरे पास पचास हज़ार रुपए इकट्ठे हो सकते हैं।'' अमीर आदमी कहता है, मेरे मुनीम ने मुझे आज सुबह ही बताया था कि मेरी सम्पत्ति पचास लाख रुपए की बनती है। पर वह भी खुश नहीं लगता, क्योंकि स्पष्ट तौर पर यह खज़ाना उससे कहीं बढ़कर मूल्यवान है।

इसी बीच दुकान मालिक आकर पूछने लगता है कि वह कैसे हमारी मदद कर सकता है ? हमें चाहे यह पता है कि हमारे पास इतने रुपए नहीं हैं, पर फिर भी हम पूछते हैं, ''यह खज़ाना कितने का है ? इसकी कीमत क्या है ?'' मालिक हंसकर कहता है, ''आप इसे खरीद नहीं सकते। पर कोई बात नहीं। मेरे बेटे ने इसका दाम चुका दिया है। आप केवल इसे कबूल कर लें। पर याद रखना कि इसके लिए आपको कीमत चुकानी पड़ेगी!''

हमारे मनों में उम्मीद की एक किरण जाग उठती है। हो सकता है कि यह खज़ाना हमें मिल जाए। पर हमारे मनों में यह प्रश्न उठता है कि ''यह हमें कितना महंगा पड़ेगा ?''

दुकान का मालिक गरीब आदमी की ओर मुड़ता है। उससे पूछता है, ''तुम्हारे पास कितने पैसे हैं ?'' उत्तर मिलता है, ''पांच रुपए।'' मालिक कहता है, ''तुम्हें यह इतने में ही पड़ेगा।''

वह दूसरे आदमी के पास जाता है। ''तुम्हारे पास कितने रुपए हैं ?'' ''पचास रुपये तुम्हें इतने ही देने पड़ेंगे।''

वह मेरी ओर देखता है। ''तुम्हारे पास कितने हैं ?'' मैं थूक अन्दर निगलते हुए कहता हूं, ''मेरे ख्याल में, अपना सब कुछ बेच दूं तो पचास हज़ार के लगभग हो जाएंगे।'' वह सिर हिलाकर कहता है, ''तुम्हें केवल इतने में ही मिलेगा।''

अन्त में वह उस अमीर आदमी के पास जाता है। ''तुम्हारे पास कितने रुपए हैं।'' ''पचास लाख रुपए।'' ''तुम्हें यह इतने में मिल जाएगा।''

इस से बढ़िया अवसर और क्या हो सकता है ? आपके पास पांच रुपए हैं या पचास लाख रुपए, कीमत एक ही है: जो कुछ तुम्हारे पास है, परमेश्वर हमारे पास जो है, उससे अधिक की मांग कभी नहीं करता, पर वह उस सब की मांग करता है, जो हमारे पास है।

स्पष्ट है कि संसार के अधिकतर लोगों को यह कीमत कुछ अधिक ही लगती है। ''तो हम ऐसा बलिदान नहीं कर सकते।'' वे चिल्लाते हैं, ''हम अपनी चीज़ें अपने पास ही रखना चाहते हैं, सब कुछ परमेश्वर को कैसे दे सकते हैं!'' यदि आपका यही निर्णय है तो अपनी मर्जी पर गौर से विचार करें, अगर आप यह बलिदान करने के लिए तैयार नहीं हैं तो आप ज़िन्दगी के बारे में जानने का अवसर गंवा देंगे। आपको अन्दरूनी खुशी और मन की शांति पाने की आस होगी। आप जीवन से मुंह मोड़कर सांसारिक चीज़ों की ओर मन लगा रहे हैं।

आयत 44 में एक छोटी सी बात है, जिससे मैं नहीं चाहता कि आप सब अनजान रहो: स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए धन के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पाया और छिपा दिया और मारे आनन्द के जाकर अपना सब कुछ बेच दिया और उस खेत को खरीद लिया। ''आनन्द के मारे।'' क्या आप सोचते हैं कि उस आदमी ने कहा, ''कितना अद्भुत बलिदान है! यह खजाना पाने के लिए मुझे अपना गधा, बकरी तथा पत्नी का हार बेचना पड़ेगा। यह तो बहुत अधिक है ?'' बेशक नहीं! मेरे ख़्याल में वह कभी किसी को, तो कभी किसी को बताते हुए अपना कीमती सामान बेचने के लिए गुनगुनाते हुए जा रहा था। आखिर उसे वह चीज़ मिलने वाली थी, जो उन चीज़ों से अधिक कीमती थी, जिन्हें वह बेचने जा रहा था!

ख़ज़ाने को पाने के लिए अपना सब कुछ त्याग देने का अर्थ है कि उसे खज़ाने की कीमत पता चल गई है। वास्तव में एक बार उसकी कीमत समझ आ जाने पर हमें समझ आ जाएगा कि उसे पाने के लिए किया गया कोई बलिदान बेकार नहीं गया। हम जो कुछ भी करते हैं उसकी तुलना हम उस सबसे नहीं कर सकते जो परमेश्वर हमारे लिए करता है और करेगा। मसीह में आने से पहले अपनी नज़र में कीमती चीज़ों के बारे में बताने के बाद फिलिप्पियों के नाम पत्र में कलीसिया को पौलुस ने लिखा:

> परन्तु जो-जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैंने मसीह के कारण हानि समझ लिया है। वरन मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहिचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूं: जिस के कारण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और *उन्हें कूड़ा समझता हूं,* जिससे मैं मसीह को प्राप्त करूं (फिलिप्पियों 3:7, 8)।

सारांश

इस पाठ का शीर्षक पहली बार देखने पर आपको लगा होगा, कि यह पाठ उस जवान

हाकिम पर होगा क्योंकि उस कहानी में भी इसके साथ मिलते-जुलते शब्दों का इस्तेमाल देखने को मिलता है। वह जवान यीशु के पास आया और यह पता लगाने पर हैरान हो गया कि हमेशा की ज़िन्दगी का वारिस होने के लिए उसे क्या करने की ज़रूरत है। यीशु ने उसे कहा कि "यदि तू सिद्ध होना चाहता है तो जा अपना माल बेच कर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा; और आकर मेरे पीछे हो ले" (मत्ती 19:21)।[16] दूसरे शब्दों में, "अपना कूड़ा-कबाड़ फैंक दे तो तुम्हें खज़ाना मिल सकता है।" अफ़सोस कि वह जवान हाकिम अपना कूड़ा-करकट संभालकर रखना चाहता था, इसलिए वह निराश होकर चला गया।

खज़ाना बेचने के लिए नहीं रखा जाता, न यह आधे मूल्य में मिलता है। कीमत वही है, जो कुछ आप के पास है। यदि आप अपना सब कुछ देने के लिए और जो कुछ आपके पास है, उसे प्रभु को देने को तैयार हैं तो वह ख़ज़ाना अर्थात आशिषें आप को मिल सकती हैं!

टिप्पणियां

[1]उनके पास ऐसी जगह थी जिसमें कीमती चीजें रखी जा सकती थी और उनका प्यार मिल सकता था, जिसे NASB बाइबल में "बैंक" कहा गया (मत्ती 25:27)। [2]अपना पैसा बैंक में रखने परन्तु उसे वापस न पाने वाले लोगों के उदाहरण दिए जा सकते हैं, इस लिए उन्हें बैंकों में विश्वास नहीं था, जिस कारण वे मिट्टी के बर्तन, गद्दे या पीछे आंगन में कोई घड़ा या पुरानी गागर लेकर उस में रख देते थे। (आज हम इसे उन लोगों के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं, जिनका पैसा चिट फंड कंपनियों और कमेटी डालने वालों ने डकार लिया।) [3]जैसी जेम्स अमेरिका के आरम्भिक दिनों में एक प्रसिद्ध लुटेरा था। [4]इस कहानी को क्षेत्र के लोगों की आवश्यकतानुसार बदला जा सकता है। कई इलाकों में छिपे हुए खज़ाने की अपनी लोक कथाएं हैं। [5]कुछ अपवाद हैं, जैसे मत्ती 13 में बीज बोने वाले का दृष्टांत (आयतें 18-23) ये "अपवाद हैं, जो नियम को प्रमाणित करते हैं।" [6]कुछ दृष्टांतों में ऐसा करने पर हम परेशानी में पड़ेंगे, जैसे कि लूका 18:1-8 में हठी विधवा का दृष्टांत। हर बात को समानांतर बनाने की कोशिश करने से हम परमेश्वर को ऐसा न्यायी बना देंगे जिसे मनुष्यों में कोई दिलचस्पी नहीं है! [7]वह यशायाह की पुस्तक पढ़ रहा था। [8]मूल लेख में "सब" के लिए भाववाच्य शब्द है जबकि "मोती" और "मोतियों" के लिए पुरुषवाचक शब्द है, जिसमें यह संकेत मिलता है कि व्यापारी ने केवल अपने मोती ही नहीं] बल्कि जो कुछ भी उसके पास था, सब बेच दिया। [9]"मुझे तेरा राज्य प्रिय है" उद्धरण *एसीयू* प्रैस, 1974 से लिया गया और अनुमति लेकर छापा गया। [10]आज कई बार यीशु को "बहुमूल्य मोती" कहकर पुकारा गया है।

[11]NASB में यह स्पष्ट दिया गया है। और आधुनिक अनुवादों में केवल "उन में मिलाता" या "उन में" ही है। राज्य/कलीसिया की स्थापना पर पहले दिए गए पाठ में वचन हैं, परन्तु हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि राज्य/कलीसिया ही है जिस में उन्हें मिलाया जाता है। [12]किसी दीवार की ओर संकेत करने से काम बन सकता है। यदि काफी दरवाज़े सामने हों तो उनकी ओर ध्यान दिलाना अच्छा उदाहरण हो सकता है। [13]यह उदाहरण मत्ती 7:13, 14 में यीशु द्वारा बताए गए दो मार्गों को दर्शाने का अच्छा ढंग है। [14]कई प्रचारकों ने खोए हुए और मर रहे संसार में सुसमाचार सुनाने के लिए इस ढंग का इस्तेमाल किया है। [15]धनवान होने में कोई बुराई नहीं है, यदि वह कमाई वैध है, जिसे पहल देनी चाहिए, उसे पहल दी जाती हो और उस धन का इस्तेमाल दूसरों को आशीष देने के लिए किया जाता हो। परन्तु बाइबल संकेत देती है कि थोड़े ही लोग हैं जो धन कमाकर अपनी प्राथमिकताएं बदलते नहीं हैं (मत्ती 19:23, 24; 1 तीमुथियुस 6:9, 10, 17-19)। इस कहानी वाले व्यक्ति ने असली धन पाने के लिए अपना सारा धन बेच दिया था। [16]यीशु उस जवान के मन के लोभ पर ध्यान दे रहा था और उसे पूर्णकालिक चेला बनने के लिए कह रहा था। इस जवान के लिए यीशु के शब्द पतरस और अंद्रियास को कहे यीशु के शब्दों से मिलते जुलते थे कि "जाल छोड़ कर मेरे पीछे हो लो।"